रुट ट्रेनर में बीमारी एवं बचाव

रुट ट्रेनर में पौध को बीमारी से बचाने के लिए शुरू आती अवस्था में तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना अत्यंत आवश्यक है इसके लिए पौधों को ग्रीन नेट शेड में रखना चाहिए। साथ ही पौधों में बीमारी दिखने पर कीटनाशक दवा जैसे एंडोसल्फॉन का 1 प्रतिशत के घोल का छिडकाव एवं फफूँदनाशक रोगार अथवा बैविस्टीन के एक प्रतिशत के घोल का छिडकाव करने से पौधे में होने वाली बीमारी से बचाव किया जा सकता है।

पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रेनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि मिट्टी + रेत + गोबर खाद को बराबर अनुपात (1:1:1) में लेकर उसमें प्रति पौध 40 ग्राम वेम के साथ पायी गयी। अत: यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अतयंत उपयोगी होगा।

रुट ट्रेनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रेनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई / आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रेनर मे तैयार लगभग 06 से 08 माह पुराने पौधे को रुट ट्रेनर से निकालकर वृक्षारोपण के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। रुट ट्रेनर मे पौधे की कुल लंबाई 37 से 49 से.मी. या उससे अधिक होनी चाहिए।

उपयोग

इसकी लकडी की मजबूती को देखते हुए इसका उपयोग इमारती लकड़ी के रूप में अर्थात् फर्नीचर, छत, दरवाजे आदि बनानें के कार्य में उपयोग किया जाता है साथ ही इसके बीज के तेल का उपयोग औषधीय रूप में किया जाता है। इसके टेनिन का उपयोग डाई बनाने में किया जाता है। इसकी लकडी से प्राप्त होने वाले तेल का उपयोग भी औषधीय रूप में अर्थात् एक्झिमा के लिए किया जाता है। फूल का उपयोग अस्थमा एवं पेशाब से सबंधित बीमारी में किया जाता है। पौधे को बीज से तैयार करने के अलावा रूट एवं शूट से भी तैयार किया जाता है जिसमें 06 से 01 वर्ष पुराने पौधे से 25 सेमी. लंबी रूट एवं 03 से 04 सेमी. शूट लेकर रोपित किया जाता है। इस विधि से शीघ्र एवं स्वस्थ्य पौधे तैयार होते है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञनिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

सागौन
रुट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(टेक्टोना ग्रेन्डिस)

वन उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner

सागौन- -रुट ट्रैनर मे उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - सागौन
वनस्पति का नाम- टेक्टोना ग्रेन्डिस

परिचय

यह वर्बनेसी कुल का वृक्ष है।

पहचान

यह चिरहरित अर्थात् वर्ष भर हरा-भरा रहने वाला पर्णपाती वृक्ष है। यह वृक्ष प्राय: 80 से 100 फिट लंबा काष्ठीय होता है। यह शाखा और शिखर पर ताज जैसा चारों तरफ फैला हुआ होता है।

प्राप्ति स्थान

यह भारत, म्यांमार और थाईलैण्ड में पाया जाता है। भारत में यह मुख्य रूप से अरावली पर्वत से बुंदेल खंड तक के क्षेत्रों में पाया जाता है साथ ही लगभग सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

रेतीली, कछारी, काली कपासी, चिकनी लेटराइट आदि मिट्टी में इसकी बढ़त अच्छी देखी गई है अर्थात् पानी का निकास रहना अथवा अधोभूमि का सूखा रहना अत्यंत आवश्यक है। वर्ष में 50 इंच से अधिक वर्षा वाले और 25 से 27°C तापमान वाले स्थानों में यह अच्छी वृद्धि करता हैं।

बीज चक्र (Seed Cycle)

प्रतिवर्ष बीज उत्पादित होता है परन्तु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक देखा गया है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इसकी पत्तियां जनवरी-फरवरी माह में पतझड़ होता है। पत्तियां 01 से 02 फीट लंबी एवं 06 से 12 इंच चौडी होती हैं। इसके फूल लच्छेदार सफेद रंग के होते हैं एवं अगस्त से सितंबर माह के मध्य लगते हैं। फल अक्टूबर से जनवरी के मध्य लगते हैं। फल गोलाकार, भूरे, स्लेटी रंग के होते हैं। जो कि फरवरी-मार्च के मध्य पककर तैयार होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 2000 से 2500 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 3 वर्ष तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में 06 से 12 माह तक सुसुप्तावस्था होती है।

अंकुरण क्षमता

पौध प्रतिशतता 20 से 25 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 40 से 60 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

कमरे के तापमान पर जूट के थैले में अथवा टिन की टंकियों में भण्डारित किया जाना चाहिए।

उपयोगिता की अवधि

02 वर्ष के अंदर उपयोग कर लिया जाना चाहिए। तीसरे वर्ष अंकुरण कम होने लगता है।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व बीज के ऊपरी कठोर कवच को हटाने के लिए पूर्व से ही प्रचलित विधियां अर्थात् गड्ढे में गोबर एवं मिट्टी के घोल के साथ सडाया जाता है जिसे 15 दिन के अंतराल पर सुखाया एवं पुन: गड्ढे में डाला जाता है। इस तरह 5 से 6 चक्र पूर्ण होने पर बीज को गड्ढे से निकाल कर उसे फर्श पर जूट के बोरे से रगडकर धोने के पश्चात् बुवाई करने योग्य बनाया जाता है। दूसरी विधि में बीज को सीमेंट के पक्के प्लेटफार्म पर डालकर पानी से लगातार सात दिनों तक सिंचाई कर कुटाई करके बाहरी कठोर आवरण को हटाया जाता है। इस तरह से उपचारण के पश्चात् बीज की बुवाई की जाती है। वैज्ञानिक तरीके से बीज को सात दिनों तक पानी में सडाकर मशीन से छिलका हटाकर बुवाई योग्य बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त बीज का उपचारण 20 प्रतिशत ब्लीचिंग पाउडर के घोल में 1 घंटे तक डुबो कर साफ पानी से धोकर भी किया जाता है जिससे बीज में अच्छा अंकुरण प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अंकुरण हेतु बीज को महीन छनी हुई रेत में बुवाई करना चाहिए।

बुआई का समय

बीज की बुवाई वर्षा प्रारंभ होने के एक सप्ताह पहले की जानी चाहिए। ब्लीचिंग पावडर से उपचारित बीज की बुवाई अप्रैल से मई माह में की जा सकती है। परंतु इस समय बुवाई करने पर बीज में प्रतिदिन सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 90-100 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

पौधो को क्यारी मे अंकुरित कर, रुट ट्रैनर मे स्थान्तरित करते है क्योकि रुट ट्रैनर मे उपचारण उपरांत सीधे बुवाई करने पर अंकुरण कम प्राप्त होता है।

Scanned with OKEN Scanner